देखो नैना नूर जमाल

आंखों का मुख्य कार्य तो है देखना-परन्तु ये आंखे सुनती और बोलती भी हैं। आंखो के बोलने से अर्थ है - दिल में छिपे हुये समस्त भावों का आंखों द्वारा प्रदर्शन - यदि क्रोधित होने पर ये आंखे चिनगारियां बरसाती है तो प्रेम-प्यार भी इन आंखों के द्वारा ही छलकता है। दुख और पीड़ा में ये आंखें आसूं बहाती है तो प्रसन्नता का इज़हार भी ये आंखें ही करती है। ये तो हुआ इन आंखों के द्वारा बोलने का काम - परन्तु ये आंखें सुनती कैसे हैं? कहने वाले की ओर आंखे केन्द्रित कर के रखने से कानों से सुनी हुई बात सीधे दिल में उतर जाती है।

तो प्यारे सुन्दरसाथ जी - यह तो हुई इस झूठे संसार की मुर्दा इन्द्रिय आंख की दासतां - जिसे यहां की भाषा में नैन भी कहा जाता है। परन्तु वे नैन जो नूर जमाल के हैं - रूह की दृष्टि खुले बिना दिखाई नहीं देते। केवल इन्द्रावती का दिल अर्श होने के कारण सातवें आसमान लाहूत में सदा-सर्वदा रहने वाले नूरजमाल के नैनों की खूबियों का वर्णन यहां नासूत में हो रहा है। इन नूरी नैनों की न तो विशेषताओं की यहां कोई मिसाल है और न ही सौन्दर्य की - इन्द्रावती के तन में जब स्वयं साहेब विराजमान हुए - तो उन्होंने खुद अपने ही अंगो का वर्णन इन्द्रावती से करवाया।

जिन के सभी अंग रतन जड़ित मणियों के समान हों - शरीर के अंग हीरा माणिक - पुखराज - नीलवी के समान झलकते हों उन के नैनों की शोभा क्या होगी? जब शोभा का वर्णन करना कठिन जान पड़ा तो सागर कह दिया क्यों कि सागर जैसी अथाह गहराई के समान गहराई किसी भी वस्तु की नहीं है। तो इस सपने के ब्रह्माण्ड में राज जी के नैनों की शोभा का वर्णन हो तो कैसे? रूहों की नज़र धनी के जिस अंग पर पड़ जाती है - वहां से तभी हटती है जब राज जी स्वयं चाहें - क्यों कि रूह अंगो की शोभा में गरक हो जाती है - धनी के अंग-अंग में इश्क है - और इश्क के सुख रूहों को राज जी के अंग-अंग से मिलते हैं - परन्तु इश्क के सम्पूर्ण सुख तो राज जी के नैनो से नैन मिला कर ही लिये जा सकते हैं।

तो सुन्दर साथ जी - जैसे माली बगीचे को पानी से सींचता है - बगीचे के एक-एक पौधे फूल तथा पत्ते से वह स्नेह करता है इसीलिए सारा बाग हरा-भरा, खिला-खिला रहता है। उसी प्रकार राज जी इश्क अमीरस के द्वारा परमधाम के जर्रे-जर्रे को अपनी इश्के-नज़र से सींचते हैं। उनके नैन सभी प्रकार के रसों से युक्त रसीले-मस्ती भरे मद के प्याले हैं। फिर रूहें उन नैनों रूपी मद के प्यालों से जाम पर जाम पीती हुई इश्क की मस्ती में लाल गुलाल क्यों न हों।

कई सुख अमृत सींचत, ज्यों रोप सींचत बन माली।
इन बिध नैनों सींचत, रूह क्यों न लेवे गुलाली।।

प्र० १२/१२ सागर

राज जी के नूरी आकर्षक रसीले नैनों में इतनी कशिश है कि नैन से नैन मिलते ही इश्के

Nijanand App

नज़र दिल को चीरती हुई रूह के सब अंगों को बींध देती है - इस इश्क की आग को केवल अग्नि से बने हुए तन जो केवल रूहें हैं वही सहन कर सकती हैं। इश्क बाण का तीर लगते ही पहले तो रूहें तड़प उठती हैं - परन्तु फिर जाम पर जाम पीती हुई इश्क की मस्ती में कभी सुराही बनती हैं तो कभी प्याला बनती है। इश्क की मस्ती में राज जी तथा रूहें आशिक-माशूक की भांति केवल लीला के लिए दो दिखाई देते हैं। परन्तु वाहेदत में इन का तन-मन-इश्क एक है - इसलिए ये दो दिखाई देने पर भी एक हैं। रूहें हर तरह से बेनियाज़ इश्क से भीगी हुई प्रतिपल लीला में मगन रहती हैं। जैसे सागर की लहरें - वे क्या जाने, कि किस की मस्ती तथा किस के जोश के बल पर थपेड़े भरती हुई वे बढ़ती चली जा रही है।

एक रस होइए इसक सो, चले प्रेम रस पूर।
फ़ेर फेर प्याले लेत हैं, स्याम स्यामा जी हुजूर।।

प्र० ११/२६ सागर

नूर जमाल धनी के नैनों में इतनी कशिश है कि ये नैन एक नज़र से ही रूह के तन-मन को इश्क में गलित-गात रखते हैं - तो वे कितने सुन्दर होंगे बयान करना ही कठिन है। परन्तु इन नैनों में ऐसी कौन सी खूबियां हैं - जिस के कारण ये नैन इतने सुन्दर दिखाई देते हैं। इन्द्रवती की आतम ने अर्श दिल से इन खूबियों का वर्णन किया है - ये नैन जब चलते हैं तो अपनी चंचलता तथा चपलता के कारण रूहों को ऐसी गुझ इशारते करते हैं जो केवल आशिक रूहें ही समझ सकती हैं। ये नैन गुणों से भरे अति गम्भीर दिखाई देते हैं- परन्तु चंचलता तथा चपलता में इन की कोई दूसरी मिसाल नहीं है। ये नैन इतने दयालू हैं कि दया-सिंधु कहलाते हैं। शीतलता का इन नैनों से ऐसा अमृत झरता है कि सभी अंगों को शीतलता प्रदान करने वाले ये नैन सागर कहे गये हैं। इन नैनों को सभी प्रकार के रस देने वाले सुख के सागर कहा गया है। धनी की शीतल दृष्टि रूहों को वह सारे सुख देती हैं - जिन्हें पाने की रूह को तमन्ना होती है।

यहीं नहीं इन नैनों में असंख्य गुण हैं और एक-एक गुण में कई-कई गुण समाये हैं और एक-एक गुण को सागर के समान विशाल कहा गया है। उदाहरण के लिए ये नैन उज्जवल-लालिमा लिए हुए हैं - इन की उज्जवलता में भी अनेक गुण हैं तथा लालिमा मे अनगिनत गुण हैं। उज्जवलता अथवा लालिमा भी इस नासूत की नहीं है, परमधाम के नूरी तत्व का गुण है। ये नैन तिरछे हैं - भौंहे कमान के समान टेढ़ी हैं तो इन के तिरछे या टेढ़े होने में भी अनेक गुण हैं। ये तिरछे नैन इन की नुकीली नोंकें रूहों को अनेक प्रकार के इश्क के सुख देती हैं। इन्हीं तिरछे नैनों के कारण प्रियतम अत्यन्त छैल-छबीले दिखाई देते हैं। तिरछी चितवन से जब रूहों को देखते हैं तो रूह अचानक इश्क-नज़र के तीर को संभाल नहीं पाती - तड़प उठती है। परन्तु यहीं इश्के नज़र रूहों के अंग-अंग को भेद कर इन में इश्क भर देती है - इसी इश्क नज़र के कारण रूह का अंग अंग विकार रहित हो जाता है। जैसे अग्नि घास, फूस, तिनके को भसम कर देती है, उसी प्रकार इश्क

Nijanand App

की आग तन के विकारों को नष्ट कर देती है।

जब खेंचत भर कसिस, मुतलक डारत मार।
इन बिध भेदत सब अंगो, मूल तन मिटत विकार।।

सिनगार १४/११

राज जी का दिल असीमित सुखों का भण्डार है परन्तु दिल के ये सारे सुख रूहों को नज़र से ही प्राप्त होते हैं। इसीलिए इन नैनों के असंख्य गुणों में से प्रत्येक को सागर के समान कहा है। ये नैन सुखों को प्रदान करने वाले विशाल सागर के समान हैं। जैसे सागर की गहराई को नापना असंभव है उसी प्रकार राज जी के दिल की थाह पाना भी असम्भव है - उन के दिल में रूहों को नित नए-नए लाड़-लज्जत देने के भाव उठते रहते हैं। इसीलिए कब कौन सा सुख अनुभव करवायेंगे - कोई भी अनुमान नहीं लगा सकता।

राज जी इश्क का पूर्ण स्वरूप हैं - इश्क उन के अंग अंग में हैं - परन्तु इश्क के अधिकतम सुख रूहों को राज जी की नज़र से मिलते हैं। इसीलिए रूहों की नज़र जब राज जी की नज़र से मिलती है तो वह अपनी नज़र हटा नहीं पाती - क्यों कि उसे इश्क नज़र का सुख मिल रहा होता है - इसीलिए जितनी अधिक नज़र मिलेगी - इश्क का सुख उतना ही अधिक होगा। रूहें जो अर्श-अजीम की रहने वाली हैं - इश्क ही उन का खाना-पीना-दीदार तथा सिनगार है - इसलिए वह प्रतिपल इन नैनों से अमीरस पीते हुए भी तृप्त नहीं होती।

देख देख तो देखिए, तो अधिक अधिक अधिक।
नैन देखे सुख पाइए, जानों सब अंगों इसक।।

सिनगार १४/२४

राज जी के दिल के सभी गुण उन के मुखारबिन्द पर भी झलकते हैं - इसीलिए चेहरे को दिल का आईना कहा गया है। रूहें राज जी के मुखारबिन्द से भांति-भांति के सुख लेती हुई नज़र से नज़र मिलाती है - नैन से नैन मिलते ही राज जी रूह के दिल में समा जाते हैं - तो दो दिल एकाकार हो जाते हैं - एक दिल में अरस-परस हो जाते हैं।

नैन देखें नैन रूह के, तिन सो लेवें रंग रस।
तब आवें दिल में मासूक, सो दिल मोमन अरस-परस।।

सिनगार १४/१६

राज जी के माथे पर तीन प्रकार की टेढ़ाई है - भौंहें तीर-कमान की भांति टेढ़ी है- नैन तिरछे हैं - और इन नैनों की नोंके भी तीखी हैं। यह तीन प्रकार की टेढ़ाई हुई। धनी रूहों को नज़र -कमान का त्रिगुड़ा तीर खेंच कर मारते हैं जो उन के सीने में भाले के समान चुभ जाता है - यह इश्के नज़र का तीर है - सदा-सदा इश्क की प्यासी रूहें ही इस तीर की चुभन को सहन करने की क्षमता रखती हैं - और सदा इश्क तथा आनन्द की मस्ती में रहती हैं।

Nijanand App

इस खेल को रूहों को भली-भांति दिखलाने के लिए धनी मेहर की दृष्टि दिल में लेकर बैठे हैं - राज जी के नैन वहां हैं, नजर भी वहीं है बदला है कुछ तो रूह की नज़र बदली है - जो खेल देखने में मगन है। जब धनी दिल में मेहर को ले लेते हैं तो तिरछी चितवन से रूहों की दशा भी अपने समान तिरछी कर देते हैं। पहले तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई कहर ढा रहा हो क्यों कि विरह की तड़प के कारण रूह की दशा इस संसार के योग्य नहीं रहती - परन्तु विरह की तड़प से जब तन-मन निर्मल हो जाता है तो यह कहर ही मेहर हो जाती है क्यों कि यह त्रगुड़ा तीर कोई पांच तत्व तीन गुण का नहीं है, यह तीर तो सातवें आसमान लाहूत में रहने वाले नूर जमाल की मेहर की नज़र का तीर है - जो पल-पल अपनी रूहों पर नज़रे करम करता ही रहता है।

चरण रज सुन्दरसाथ

कान्ता भगत, दिल्ली

श्री राज श्यामा जी सदा सहाय

लाड़-प्यार

एक लाड़-लड़ाया पिया आपने, हम रूहों के संग।
खेल दिखाया आपने, देने लज्जत अपने दिल के अंग।।

हम तो यहां माया में रच बस गये, तुम वहां अकेले पड़ गये।
दिल न लगे तुम्हारा रूहों बिन, हमें बुजरकी देने के वास्ते कह दिया,
रूहें भी न रहें मुझ बिन।।

कभी बुलाओं पाठों के बहाने, कभी होली के बहाने आ जाओ।
प्रेम के प्याले भर भर के, पकड़ के तालू हमें पिलाओ।।

फिर भी तेरे प्रेम को हम न समझे, ब्रह्म सृष्टि नहीं, कोरे जीव ही निकले।
यहां भी तूने अमीरस बरसाया, जीव को जगाने का उद्धम बतलाया।।

Hook or Crook, तुमने है मन में ठानी।
बेशक कितनी हो कड़वी, दवा तो इनको है पिलानी।।

हटेगा झमेला माया का, उठ खड़े होगें जाग।
आत्म उठेगी मूलतन में,
जीव ने भी पाया अखण्ड मुक्ति का मार्ग।।

प्रणाम जी

सुनील निजानन्दी, कानपुर

Nijanand App